International Journal of Applied Research 2020; 6(9): 451-452

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(9): 451-452
www.allresearchjournal.com
Received: 21-07-2020
Accepted: 25-08-2020

कुमारी अपर्णा
शोधार्थी, मगध विष्वविद्यालय,
बोधगया, बिहार,, भारत

Corresponding Author:
कुमारी अपणा
शोधार्थी, मगध विष्वविद्यालय,
बोधगया, बिहार,, भारत

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में नारीवादी चिंतन

कुमारी अपर्णा

प्रस्तावना

मैत्रेयी पुष्पा ऐसी हिन्दी कथा–लेखिका है, जिसने कहानी, उपन्यास, आत्मकथा और आलेखों के माध्यम से आजाद भारत में गतिशील नारीवादी आन्दोलन को धारदार दिशा प्रदान किया है। वह औरत होने के नाते औरत के मानवीय अधिकार के लिए सतत् संघर्ष करती हैं। वे आजाद भारत की हिन्दू स्त्रियों की हक और हैसियत की पहचान करते हुए उसे लोकतांत्रिक अधिकार दिलाने हेतु सतत् लेखनरत रही है। यदि यह कहा जाय कि मैत्रेयी पुष्पा के लेखन का मूल उद्देश्य औरत की आजादी है, तो अत्युक्ति नहीं होगी। भारतीय हिन्दू औरतों की सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक हैसियत की पहचान करते हुए उसके पिछडेपन के कारणों की तलाश करती है। वह भारतीय समाज के हिन्दू धर्म की स्त्रियों की स्थिति और परिस्थिति का विश्लेषण करती है और इसी क्रम में मैत्रेयी का रचना संसार पितृसत्तात्मक समाज की चालाकियों और चालबाजियों का पर्दाफास करती है।

मैत्रेयी स्त्री–चेतना की सजग प्रहरी के रुप में हिन्दी कथा–साहित्य में प्रस्थापित हैं। नारी के लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए संघर्षरत लेखिका की आत्मकथाओं में उनके कथा लेखन के मूल लेखकीय प्रयोजन का पता चलता है। मैत्रेयी ने अपने कथा साहित्य में जिन स्त्री पात्रों का चित्रण किया है, वे उसके जीवन से किस तरह जुडा हुआ है, इसकी स्पष्ट पहचान इनकी आत्मकथाओं से होता है। मैत्रेयी के औपन्यासिक स्त्री–पात्र, परंपरागत रुढियों को तोडनेवाली बागी चरित्र है। वे नारी पात्र तमाम् सांस्कृतिक नाइंसाफियों के विरुद्ध कठोर कदम उठानेवाली पात्र हैं।

नारियों के समान नागरिक अधिकार के लिये सतत् संघर्ष किया है। लोकतांत्रिक भारत में स्त्री समानता और स्वतंत्रता की बात जायज भी लगती है और मानवीय भी। फिर भी न जाने क्यों इक्कीसवीं सदी का भारत भी नारी को लोकतांत्रिक अधिकार प्रदान नहीं कर पाया है। आज भी स्त्री दोयम दर्जे का नागरिक बनी और बनायी गयी है। आजाद भारत में 'स्त्री विमर्ष' ने साहित्य और संस्कृति को हिलाकर रख दिया है। हिन्दी लेखिकाओं ने इसमें अहम् भूमिका निभायी है। इन हिन्दी कथा और आत्मकथा लेखिकाओं में मैत्रेयी का स्वर प्रखर है।

मैत्रेयी के ग्रामीण औरतों को गुलामी का एहसास हो चला था, तभी तो वह इतना साहस और संयम से वह कदम उठाने में सफल हुई, जिसको लेकर हिन्दी आलोचना में इतनी हाय–तोबा मचायी गयी। उसपर यौनिकता और बदचलनी का आरोप लगाया गया। 'चाक' की कथा को पाप और पष्चाताप की कथा बनाया गया। रिवाजों और परंपराओं को तोडने का आरोप लगाया गया। लेकिन मैत्रेयी लिखती है –''यह कथा एक ऐसी स्त्री की आत्मस्वीकृति का आख्यान है, जो रिवाजों को स्त्री के लिए स्त्री की तरह बदलना चाहती है, वह भी स्त्री के उद्धार के लिए नहीं, उसके कर्म क्षेत्र के विस्तार के लिए।'' [1]

मैत्रेयी अपने लेखकीय प्रयोजन को बडे स्पष्ट शब्दों में लिखती हैं – ''मैंने स्त्री के लिए मनुष्य के स्तर पर जीने की स्थिति ही तो खोजी है, कि मैंने पुरुष के समकक्ष अपनी भावनाओं को बराबरी से रखा है, कि मैंने अपने समाज में लोकतांत्रिक विधान की घोषणा की है, कि औरत को हर तरह से सहनागरिक का दर्जा चाहिये।'' [2] एक लेखिका के रुप में उसने स्त्री जीवन के लिए समानता के हक की मांग ही तो की है। आजाद भारत में स्त्री को समान नागरिकता प्राप्त हो, ऐसी लेखकीय चाहत ही तो मैत्रेयी के लेखन का कारण बना है। स्त्री के लिए मानवीय अधिकार की मांग ही मैत्रेयी का लेखकीय प्रयोजन है। उसने अपने जीवन में भी पुरुषों से गैर बराबरी का दंष झेला है। उन्होंने अपनी आत्मकथा में अनेक ऐसी छवि उकेरी है, जिससे पुरुष–सत्ता की सामंती प्रवृति का विरोध किया है।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तुरी कुंडल बसै' और 'गुडिया भीतर गुडिया' की कथा नायिका का जीवन संघर्ष ही नारी के लिए स्वतंत्रता और समानता की मांग करती नजर आती है।

वह पुरुष प्रधान समाज में रहकर भी उससे संघर्ष करती है। नारी जीवन की यह संघर्ष गाथा ही मैत्रेयी के उपन्यासों, कहानियों और आलेखों में मौजूद है। सरल और सटीक शब्दों में कहा जा सकता है कि मैत्रेयी की रचनाषीलता मूलतः 'स्त्री विमर्ष' है। मैत्रेयी ने स्त्री जीवन की सच्चाइयों को पुराण कथाओं और मिथकों से निकाल कर, उसे दर्षनों और सिद्धांतों के भ्रमजाल से निकालकर उसके मानवी रुपों की रचना की है। एक स्वतंत्र और संवेदनषील नारी की रचना में मैत्रेयी ने अपना रचना संसार बुना है।

मैत्रेयी लिखती हैं– ''छल–छद्म, दुराव–छिपाव भय के कारण होता है और स्त्री के लिए भयमुक्त होना नये जीवन का रुप है।'' [3] मैत्रेयी औरत की सामाजिक हैसियत से खिन्न है। वह औरत को मर्द के अधीन देखकर अधीर हो उठती है। औरत मर्द की सेवा और सुविधा के लिए नहीं बनायी गयी है और न ही वह पुत्रवती होकर पुरुषों की वंषबेली बढाने मात्र के लिए धरती पर आयी हैं। बल्कि उसके भी अपने अस्तित्व हैं। हरेक अस्तित्व को अपनी अस्मिता की दरकार होती है। औरत होने के नाते उसे भी अपनी अस्मिता रक्षा की जरुरत है। उसकी भी अपनी आकांक्षा होती है। उसे भी मर्दों की तरह ही भूख–प्यास लगती है और प्यार की चाहत होती है। वह भी सम्मान चाहती है। वह भी पहचान चाहती है। औरत एक शरीर मात्र नहीं है। उसकी भी अपनी आषा–आकांक्षा होती है। औरत को परिवार और समाज में 'शान्त और सम्मानित जीवन भी खुद को भूल जाने के कारण मिला है।' स्त्री की अनामता स्त्रियों के लिए दर्द की एक टीस है।

गुडिया भीतर गुडिया में मैत्रेयी ने भारतीय समाज के हिन्दू दाम्पत्य में स्त्रियों की स्थिति और उसके वजूद को खंगाला गया है। पति–पत्नी के संबंधों में आने वाले उताड–चढाव को, स्त्रियों की अनामता और स्त्री होने के नाते खोने वाले अधिकार की चर्चा हुई है। नवविवाहित जीवन में दम्पतियों को जिन हालातों का सामना करना पडता है, मैत्रेयी ने उसे अपनी आत्मकथा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

मैत्रेयी की स्मृति में औरत के जीवन की जो तस्वीर है, वह ऑसुओं से भींगी है, करुणा से कलित है उनका हृदय। भय और ऑसू उसके जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। मैत्रेयी ने हिन्दी साहित्य की तमाम महत्वपूर्ण स्त्री पात्रों का उल्लेख किया है, जिसे पुरुष लेखक ने सृजित किया है। चाहे वह प्रेमचंद की 'धनिया' हो, या जैनेन्द्र की नायिका 'मृणाल' हो। उनका कहना है कि 'साहित्य में मृदुल अंगों वाली सुन्दरियों की चर्चा रही है।' [4]

मैत्रेयी साहित्य की नारी पात्रों में गोदान की धनिया, चित्रलेखा, अन्ना कैरिन्ना और मैडम वावेरी आदि का उल्लेख करती लिखती हैं –''जो पुरुष के लिए जीवित थी और उसी के लिए खत्म हुई।'' [5] स्त्रियों के जीवन की कथा पुरुष के लिए ही जीना–मरना है। मैत्रेयी इसका विरोध करती है। वह बलिदान होने वाली औरतों की कथा को पसंद नहीं करती। वह 'हाडा रानी' की कथा को वीरता नहीं बल्कि मजबूरी का मिसाल मानती है। वह उसे आत्महत्या की संज्ञा देती है। हाडी रानी युद्ध में जा रहे अपने पति के हाथों की थाली में अपना शीष काटकर रख देती है। इसे वह आत्महत्या मानती है और यह भी कहती है कि ऐसा उसने इसलिए किया ताकि उसका पति अपने पत्नी की चरित्र की चिन्ता न करे। इसे मैत्रेयी अन्याय मानती है। वह लिखती हैं –''इतिहास औरतों के लिए मरघट–कथाओं का पुलिन्दा है।'' [6] मैत्रेयी स्त्रियों के संग होने वाले क्रूर व्यवहारों का विरोध करती हैं। बेतवा बहती रही' की नायिका विधवा उर्वषी को ससुराल से खींच कर लाने और एक बूढा से उसके व्याह दिये जाने की घटना को अमानवीय मानती है। ऐसी हालत में मैत्रेयी ने स्त्री के आन्तरिक भाव को इन शब्दों में बयान किया है –''उर्वषी कहे कि पति नहीं, पति का पहली पत्नी से उत्पन्न बेटा मेरी उम्र का है, मैं उससे संभोग की इच्छुक हूँ। उसे देखकर मेरी यौनिकता जगती है।'' [7] मैत्रेयी अपने उपन्यास 'बेतवा बहती रही' को लेकर स्वंय को कोसती रही है, क्योंकि उन्होंने बहादूर नहीं एक कायर स्त्री का चित्र खींचा है। वह लिखती हैं –''रेणु की तस्वीर के सामने मैंने स्वीकार किया 'बेतवा बहती रही' लिखकर मैंने अन्याय नहीं, स्त्री के प्रति अपराध किया। अपनी कलम को कायर बनाया। '' [8] मैत्रेयी की यह स्वीकारोक्ति उसे महान लेखिका बनाती है। वह औरतों की बहादूरी की कथा कहना चाहती है। वह नहीं चाहती कि पुरुषों के लिए कुर्बान होने वाली औरतों की कथा कहे। कायर औरतों की कथा कहना और अपंग बच्चों को जन्म देना एक ही बात है। मैत्रेयी मानती है कि उर्वषी के जीवन की कथा औरतों की कायर कथा है। उसमें ऑसू हैं, करुणा है, दया है, लेकिन बीरता और धीरता नहीं है।

मैत्रेयी सामाजिक–पारिवारिक जीवन में स्त्रियों की स्थिति को लेकर अपनी आत्मकथा में प्रतिक्रिया दी है। वह रोती–कलपती नारी है, जिसे मैथिलीषरण गुप्त ने इन शब्दों में चित्रित किया है –'' अवला तेरी हाय यही कहानी, ऑचल में है दूध और ऑखों में पानी।'' मैत्रेयी मूलतः रोती–कलपती स्त्री को अहमियत नहीं देती हैं। वह साहित्य में स्त्रियों के स्वरुप को बदलने की पक्षधर हैं। उन्होंने 'देवदास' और त्यागपत्र की नायिका 'मृणाल' का उदाहरण पेष करते हुए लिखा –''उर्वषी के ऑसुओं से भींगे चरित्र की उदात्तता के प्रति आष्वस्त न होती तो क्या करती ?'' [9] औरतों के जीवन का यह दर्द मैत्रेयी को सहज स्वीकार नहीं है। वह औरतों के बहादूरी की कथा कहना चाहती है। वह औरतों के खत्म होने की नहीं, बल्कि जिन्दगी का साथ निभाने की बात करती हैं।

मैत्रेयी स्त्री–स्वातंत्र्य की पक्षधर लेखिका है। वह ऐसी स्त्री पात्र की सर्जना करती है, जो अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व में आजादी अनुभव कर सके। ऐसा स्त्री चरित्र जो पुरुष–व्यवस्था के भेडिया–गिरोह के चंगुंल में घिरा महसूस नहीं करती है। जो रिवाजों को अपने अनुकूल ढालती है। जो बूढी परंपराओं का शक्ल बदल देती है। लोग भले ही उस पर 'अनैतिक सुख और अभद्र इच्छाओं वाली जिन्दगी कहती हैं। मैत्रेयी 'प्रेम की सहभावना' का वह रुप प्रस्तुत करती है, जिससे 'अनैतिक और अभद्र भी उदात्त रुप धारण कर लेता है।

संदर्भ :

1. ''गुडिया भीतर गुडिया'' प्रकाषक : राजकमल प्रकाषन प्रा0 लि0, प्रकाषन वर्ष 2008 –
2. पृ0 246
3. पृ0 246
4. पृ0149
5. पृ0 213
6. पृ0 214
7. पृ0 215
8. पृ0 215
9. पृ0 215
10. पृ0 214